भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए ११-१७ जुलाई २०१६ साप्ताहिक सलाह

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

जुलाई -16	जुलाई माह वर्षा (मिमी)													सलाह
राज्य/ जिले	वास्तविक वर्षा (मिमी)						संभावित वर्षा (मिमी)							
दिनांक	W 30-6 to 6-7-2016	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	
पंजाब														सफेद मक्खी की संख्या कुछ स्थानों पर आर्थिक हानि सीमा पार कर चुकी है विशेषरूप से पंजाब के फाजिल्का जिले में(अबोहर ब्लाक के 5 गावों में 11 स्थलों पर; खुइयां सर्वर ब्लाक के 10 गावों में 38 स्थलों पर तथा फाजिल्का ब्लाक के 3 गावों में 3 स्थलों पर)| इन संवेदनशील क्षेत्रों के किसानों को डाइफेंथ्यूरान का छिड़काव करने की सलाह दी जाती है| इसके बाद फसल पर स्पिरोमेसीफेन का छिड़काव करें| इससे प्रौढ़ तथा अर्भकों दोनों की संख्या का नियंत्रण होगा| फरीदकोट में फसल 55 दिनों की यानी वानस्पतिक अवस्था में है| खरपतवारों के नियंत्रण के लिए अंत:शस्य क्रियाएँ की जा रही है| कपास पर सफेद मक्खी की प्रति पत्ती संख्या खारा में 7.1; रोमना अलबेलसिंह में 2.4; बरगरी में 7.6; लम्बवाली में 5.0; कोठे चांदसिंह में 8.4; सेडासिंहवाला में 12.5; अजित गिल में 11.8 तथा चैना गाव में 4.8 प्रति पत्ती पाई गई| दूसरी ओर जैसिड की संख्या सभी स्थलों में 3 से 4 प्रति पत्ती के मध्य दर्ज की गई है| कपास तथा खरपतवार पर सफेद मक्खी के प्रकोप का नियमित सर्वे खेतों में करते रहें| खरपतवार को ठीक प्रकार से निकालते रहें| बेंगन, टमाटर, भिंडी, मूंग, मेश तथा ग्वार जैसी दूसरी एकांतर पोषक फसलों में भी सफ़ेद मक्खी का आक्रमण देखा गया है| इन फसलों के समय पर प्रबंधन के लिए समय पर निगरानी करते रहें| जैसिड के प्रबंधन के लिए जैसा कि सिफारिश किया गया है नीम तेल अथवा फ्लोनीकेमिड 50डब्लूजी@80ग्रा.प्रति एकड़ की दर से फसल पर छिड़काव करें| वर्षा नहीं होने की स्थिति में फसल बुआई के एक महीने पश्चात फसल की सिंचाई करें| सिंचाई के बाद बीटी संकरों के लिए यूरिया की आधी मात्रा यानी 65किग्रा. तथा बीटी रहित संकरों के लिए 30 से 35 किग्रा. यूरिया का अनुप्रयोग करें| सिरसा में फसल 55 से 60 दिनों के मध्य वानस्पतिक तथा लघु कली निर्माण अवस्था में है| ट्रैक्टर की सहायता से निराई, गुड़ाई और अन्य अंत:शस्य क्रियाएँ प्रगति पर हैं| वर्षा के बाद
हरियाणा														
सिरसा	39.8	1	0	0	0	0	0	0	8	12	43	12	14	
हिसार	62	1	0	0	1	2	0	0	8	12	43	12	14	
फ़तेहाबाद	33.7	2	0	0	0	11	0	0	8	12	43	12	14	
राजस्थान														
हनुमानगढ़	53.9	#	0	2	0	4	0	0	8	8	6	2	2	
श्रीगंगानगर	4.3	1	0	0	0	2	0	0	8	8	6	2	2	

बांसवाड़ा	95.6	0	0	0	0	10	26	45	10	9	7	3	2	खेतों में खरपतवार का प्रकोप देखा जा रहा है| खेतों की मेढ़ों तथा आस-पास के क्षेत्रों में भी खरपतवार देखे जा सकते हैं| कपास में सफेद मक्खी का प्रकोप आरसीएच-650बीजी II में 12 से 23/3 पत्तियां के मध्य (औसत 13.6 प्रति 3 पत्तियाँ), एचएस-6 में 22 से 29 के मध्य (औसत 16.8/3 पत्तियां); गंगानगर अगेती में 9 से 20 के मध्य(औसत 11.20/3 पत्तियाँ) तथा आरएस-2013 में 14 से 21 के मध्य(औसत संख्या 14.90/3 पत्तियाँ) रिकार्ड की गई| जैसिड की संख्या 0 से 4/3 पत्तियां तथा फूलकीट संख्या 8 से 18/3 पत्तियां सिरसा में फसल सुरक्षारहित स्थिति में दर्ज की गई| जैसिड का प्रबंधन सिफारिश किए गए नीम आधारित कीटनाशकों से करें| रासायनिक कीटनाशकों के अनुप्रयोग को टालें| होने वाली वर्षा की मात्रा के अनुसार सफेद मक्खी की संख्या में कमी आती है| किसान के खेतों में कपास पर्णकुंचन विषाणु रोग के प्रारंभिक लक्षण भी देखे गए हैं| नाशीकीटों की संख्या वृद्धि के लिए किसान भाई नियमित निगरानी करते रहें| संतरा वर्गीय बगीचों के आस-पास की कपास की फसल में सख्त निगरानी करने की किसानों को सलाह दी जाती है| नीम तेल+निरमा पाउडर का छिड़काव आवश्यकतानुसार इन नाशीकीटों की संख्या आर्थिक हानि स्तर के नजदीक पहुँचने पर उन खेतों में करें| पहली सिंचाई के बाद खरपतवारों को खेत से अवश्य निकाल दें और खेत में तथा आस-पास के क्षेत्र में स्वछता बनाए रखें| किसानों को सलाह दी जाती है कि नत्रयुक्त उर्वरकों की उचित मात्रा का ही अनुप्रयोग करें| श्रीगंगानगर में फसल वानस्पतिक से लेकर लघु कली निर्माण अवस्था में है| समय पर बुआई की गई फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से कम है| फूलकीट(थ्रिप्स) तथा जैसिड का प्रकोप निम्न से माध्यम स्तर पर है| नीम तेल आधारित कीटनाशकों के फसल पर छिड़काव की सिफारिश की जाती है|पंजाब तथा हरियाणा में 15 से 17 जुलाई के मध्य अच्छी वर्षा होने की संभावना के कारण सफेद मक्खी की संख्या के स्वत: कम होने के आसार हैं|
उड़ीसा														कपास के 50% क्षेत्रफल में बुआई कार्य पूरा हो चुका है| बुआई कार्य 15 जुलाई से पहले पूरा कर लें| उर्वरकों की आधार मात्रा तथा अंकुरणपूर्व खरपतवारनाशकों का अनुप्रयोग किया जा चुका है| खेत की अंतिम तैयारी से पहले किसान भाइयों को गोबर की खाद 5 टन/हे की दर से खेत में डालने की सलाह दी जाती है| मृदा जांच रिपोर्ट के आधार पर ही उर्वरकों की आधार मात्रा दें| उर्वरकों की सिफारिश की गई मात्रा इस प्रकार है- संकरों के लिए 120:60:60 किग्रा. नत्र: स्फुरद: पोटाश/ हे. तथा किस्मों के लिए 90:45:45 किग्रा. नत्र: स्फुरद: पोटाश/ हे; **आधार मात्रा:** संपूर्ण स्फुरद मात्रा+पोटाश की आधी मात्रा+25% नत्र सामान्य बुआई अंतर 90×60सेमी. तथा सघन रोपण पद्धति(एचडीपीएस) के लिए 60×10सेमी.| हरी खाद के लिए सनई का 25 किग्रा. बीज प्रति हे. की दर से बुआई के एक दिन पश्चात बोएं तथा 25 से 30 दिनों के पश्चात कतारों के मध्य ही मृदा में मिला दें| *एजोबेक्टर* तथा पीएसबी से बीजोपचार @ 25 ग्रा. प्रत्येक प्रति किग्रा. बीज की दर से करें| सहयोगी फसल(अंत:फसल) के रूप में कपास में अरहर की 8:2 कतारों के अनुपात में लगाएं| अरंडी, गेंदा तथा मक्का की फांस फसलें कपास के खेतों के चारों ओर लगाएँ| खरपतवार प्रबंधन के लिए प्रबंधन के लिए पेंडीमेथेलिन@1.0 किग्रा./हे. का खेत की मृदा पर अंकुरण-पूर्व छिड़काव करें| जारी होने जा रही किस्मों क्यूयूएटी बीएस-279 तथा बीएस-30 को भी सघन रोपण पद्धति के अंतर्गत
कोरापुट	141.3	3	4	4	36	30	16	7	7	5	7	65	11	
कालाहांडी	83.5	0	3	5	58	50	18	1	2	5	8	30	7	
बोलांगीर	72.2	0	2	#	20	18	13	1	0	5	0	3	0	

														इनकी खेती भी की जा सकती है|
गुजरात														यद्यपि मानसून गुजरात के सभी कपास उत्पादक जिलों में फैल चुका है लेकिन इसका वितरण असमान है| नमी संरक्षण उपायों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करें| फसल सीजन में प्रतिबल से बचने के लिए निम्न सिफारिशों पर ध्यान दें; 1) बुआई का कार्य 15 जुलाई से पहले पूरा कर लें| 2) मेढ़ तथा नाली विधि से बुआई| 3) नमी के ह्रास को न्यूनतम करने के लिए फसल अवशेष अथवा अखबारी कागज को फसल आच्छादन के रूप में अपनाएँ| 4) अल्पावधि अथवा मध्यम अवधि के तथा जैसिड के लिए सहनशील बीटी संकरों की बुआई करें| 5) अल्पावधि किस्मों के लिए अंतर 90×30सेमी. विशेषरूप से उन क्षेत्रों के लिए जहाँ सिंचाई के सीमित साधन है| 6) किसान विश्वसनीय स्त्रोतों से ही बिल के साथ बीज खरीदें| मध्यम गहरी काली मृदाओं के लिए अल्पकालीन(180 दिनों से कम) तथा रस-चूषक कीटों के लिए सहनशील बीटी संकरों का चुनाव करें| इससे प्रभावी नाशीकीट प्रबंधन में सहायता मिलेगी| अगेती तथा समय पर बुआई की गई कम अवधि की फसल नाशीकीटों के प्रकोप से भी बच जाती है तथा पुष्पन तथा गूलर निर्माण जैसी महत्वपूर्ण फसल अवस्था में मृदा नमी का उपयोग कर पाती है| इसके फलस्वरूप कम आदानों की जरूरतों के साथ अधिक उपज मिलती है| बुआई से ठीक पहले अथवा बुआई के 48 घंटों के अंदर ही किसानों को पेंडीमेथेलिन@1.0 किग्रा./हे. की दर से अनुप्रयोग करने की सलाह दी जाती है| जूनागढ़ में फसल लगभग तीन सप्ताह की है| अंत:शस्य क्रियाएँ तथा खरपतवारों को निकालने के कार्य हो गए हैं| जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम(1.0 प्रति 3 पत्तियां/पौधा) है|
अमरेली	119.5	1	0	0	2	0	1	0	26	16	8	17	23	
भावनगर	119.7	0	0	0	0	0	0	0	28	9	4	9	12	
जामनगर	13.1	0	0	0	0	0	0	1	26	19	11	4	11	
राजकोट	28.1	0	0	0	0	0	0	1	26	16	8	17	23	
भरूच	43.7	0	0	0	3	1	0	2	75	35	5	11	10	
सबरकांठा	69.9	0	0	0	0	9	2	18	72	0	3	6	10	
सुरेन्द्रनगर	32.3	0	0	0	0	0	0	2	48	19	7	3	11	
अहमदाबाद	22.7	0	0	0	0	1	0	9	96	38	8	17	23	
वडोदरा	23.3	0	0	1	2	0	7	24	98	19	6	6	7	
पाटन	16.9	0	0	0	0	0	0	33	57	5	0	6	16	
मेहसाना	41	0	0	0	0	0	0	25	53	3	0	3	11	
मध्यप्रदेश														बारानी क्षेत्रों के लिए कम अवधि से मध्यम अवधि की किस्मों को प्राथमिकता दें| कुछ खेतों में बुआई का कार्य चल रहा है| नाशीकीटों तथा रोगों का कोई प्रकोप फसल पर नहीं है|
खरगोन	28.1	0	0	0	11	16	34	34	8	6	11	3	9	
धार	78	1	0	0	3	56	29	29	10	4	6	4	8	
खंडवा	54.1	1	0	2	44	65	43	57						
महाराष्ट्र														महाराष्ट्र के सभी कपास उत्पादक जिलों में बुआई के लिए आवश्यक पर्याप्त वर्षा हो चुकी है| जल संग्रह की तैयारियां तुरंत पूरी करें| पहले बोई गई फसल में उचित जल निकासी के उपाय करें| कुछ जिलों में लगातार वर्षा होती रहने से खरपतवार नियंत्रण की समस्या है| अंकुरण-पश्चात खरपतवारनाशक जैसे क्वीजालोफोप अथवा प्रोपक्वीजाफोप अथवा पायरीथायोबैक का प्रयोग करें| मृदा की स्थिति अनुकूल होने पर निराई-गुड़ाई जैसी अंत:शस्य क्रियाएँ अपनाएं| देर से बुआई की गई फसल में आगामी सप्ताहों में नमी प्रतिबल की समस्या आ सकती है| उचित मृदा नमी संरक्षण उपाय करें| परभणी, बुलढाणा, अकोला, वाशिम तथा नांदूरबार जिलों में सामान्य से 40% कम क्षेत्रफल में बुआई हुई है| दस जुलाई के बाद बोई जाने वाली फसल में शस्य क्रियाओं के प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी| कुछ खेतों में फसल 20 से 30 दिनों की है जिसकी बुआई समय पर की गई थी| इस प्रकार नाशीकीट एवं रोगों से संबंधित कोई समस्या नहीं पाई गई| खेतों को खरपतवारमुक्त रखने पर ध्यान दें| उर्वरकों के अनुप्रयोग में यह सुनिश्चित करें कि स्फुरद तथा पोटाश की मात्रा आधार मात्रा के रूप में
नागपुर	117.1	36	1	23	42.3	19	7	5	7	1	2	1	2	
वर्धा	137.7	17	0	32	92.8	18	7	15	6	1	0	0	0	
चंद्रपुर	179.6	9.9	0	6.2	120.5	59	36	96	7	1	2	0	3	
यवतमाल	96.8	5.2	0	3.6	72.8	26	26	51	6	1	0	0	0	
अमरावती	126.6	6.6	1	11	56.6	17	53	37	7	2	5	2	2	
अकोला	73.2	0.4	0	0.5	18.1	9	73	91	7	2	2	0	2	
बुलढाना	52.8	4.4	0	0.2	5.6	14	54	79	7	6	6	2	6	

परभणी	70.9	14	0	1.8	2	35	14	53	14	0	0	0	3	दे दी जाए तथा नत्र की अधिक मात्रा का प्रयोग न हो| राज्य के कई क्षेत्रों में लगातार वर्षा होने की स्थिति में नत्र की हानि से बचने के लिए गोबर की खाद तथा केंचुआ खाद को ज्यादा प्राथमिकता दें| इस समय किसी भी रासायनिक कीटनाशक के प्रयोग की आवश्यकता नहीं है|
नांदेड़	81.7	6.3	0	0	14.9	28	35	87	12	0	3	0	3	
बीड़	32.8	22	0	0	1	10	8	4	5	0	0	0	3	
वासिम	67.9	10	0	0	20.2	12	30	63	11	2	0	0	0	
धुले	26.8	0.8	0	0	1.9	1	59	13	101	50	4	3	7	
जलगांव	52	7.4	1	0.1	4.1	4	75	44	121	10	15	4	12	
जालना	67.2	24	1	0.2	0.8	32	44	35	7	0	0	0	4	
औरंगाबाद	64.5	39	0	0	1.1	20	68	21	58	10	5	0	5	
तेलंगाना														महबूबनगर तथा नालगोंडा जिलों में वर्षा का वितरण असंतोषजनक तथा असमान रहा है| दूसरे कपास उत्पादक जिलों में वर्षा पर्याप्त हुई है| वारंगल, खम्म्म, महबूबनगर, तथा नालगोंडा जिलों में नमी संरक्षण उपाय करने अति आवश्यक हैं| राज्य के किसी भी हिस्से से नाशीकीट तथा रोगों के आगमन की कोई रिपोर्ट नहीं है| इस समय कहीं भी कीटनाशकों के प्रयोग की आवश्यकता नहीं है|
आदिलाबाद	84	6	0	0	7	57	34	58	15	6	5	3	3	
वारंगल	99.1	5	4	0	7	14	19	6	8	4	6	10	12	
खम्मन	125.8	7	7	0	10	5	10	4	10	3	5	7	8	
कारिंगर	67.2	#	5	0	21	36	33	27	6	0	0	5	5	
नालगोंडा	25.2	2	3	0	0	2	0	0	6	0	0	6	8	
महबूबनगर	6.4	1	#	1	0	4	1	2	6	0	4	8	6	
आंध्रप्रदेश														फसल अंकुरण अवस्था में है तथा कपास बुआई का कार्य अभी भी चल रहा है| प्रकाशम जिले में ग्रीष्मकालीन बुआई की गई कपास वानस्पतिक अवस्था से गूलर प्रस्फुटन अवस्था के मध्य है| अक्टूबर के पश्चात दीर्घ अवधि वाली कपास में होने वाले गुलाबी सूँडी के आक्रमण को दृष्टिगत रखते हुए अल्प तथा मध्यम अवधि की किस्मों व संकरों को वरीयता दें| कपास के किसानों द्वारा बीज तथा अन्य आदानों की खरीदी का कार्य चल रहा है| विश्वसनीय बीटी बीज ही बिल के साथ खरीदें|
गुन्टूर	11.5	2	2	0	1	2	0	0	0	0	4	8	10	
प्रकासम	1	0	3	0	1	1	0	1	2	6	10	12	15	
कर्नाटक														बुआई की गई फसल 20 से 30 दिनों की पौद अवस्था में है| हवेरी, धारवाड़, बेलगाम तथा गडग जिलों के अधिकांश हिस्सों में विगत सप्ताह अच्छी जमीन को तर करने वाली वर्षा हुई जिससे कपास बुआई का कार्य हुआ| सभी कपास उत्पादक क्षेत्रों में बीटी कपास की बुआई का कार्य लगभग सम्पन्न हो चुका है| 20 से 30 दिनों की फसल में पौध विरलीकरण करने की सलाह दी जाती है| यदि उर्वरकों की आधार मात्र नहीं दी जा सकी है तो उसका अनुप्रयोग करें| फसल 30 दिनों की होने पर अंत:शस्य क्रियाएँ तथा हाथ से निराई का कार्य करें| अगेती बोई गई फसल में एक बीजपत्री तथा द्विबीज पत्री खरपतवार दिखाई दे रहे हैं| प्रारम्भिक अवस्था में अंत:श्यस्य क्रियाओं द्वारा तथा खरपतवारों को हाथ के निकालकर इनका प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है|खरपतवारों के भारी प्रकोप होने तथा मजदूरों की उपलब्धता न होने की स्थिति में क्वीजोलफोप ईथाइल 1.0 मिली/लीटर पानी तथा पायरीथायोबैक सोडियम
धारवाड़	41	1	8	2	8	21	3	6	12	6	8	8	20	
हवेरी	62.4	6	3	0	4	1	1	1	8	7	9	8	13	
मैसूर	19.6	2	5	1	3	8	2	1	2	3	5	13	12	

														@ 0.8 मिली/ली. पानी की दर से अंकुरण पश्चात खरपतवारनाशक के रूप में एक बीजपत्री तथा द्विबीज पत्री खरपतवारों के नियंत्रण के लिए अनुप्रयोग करने की सिफारिश की जाती है| हवेरी जिले के कुछ हिस्सों में रस चूषककीटों तथा प्ररोह घुन का प्रकोप दर्ज किया गया है| प्रात:काल में कपास के पौधों के ऊपरी भाग पर आश्रय ले रहे प्रौढ़ घुन कीटों को हाथ से चुनकर नष्ट करने का सुझाव दिया जाता है| देसी कपास को छोड़कर बीटी कपास की बुआई का कार्य लगभग सभी कपास उत्पादक क्षेत्रों में सम्पन्न हो चुका है| देसी कपास की बुआई का कार्य इस महीने के अंत तक मिर्च तथा प्याज की फसलों में अंत:फसल के रूप में चलेगा| तीस दिनों की फसल मे डीएपी तथा यूरिया 25किग्रा.प्रत्येक के साथ 15 किग्रा.म्यूरेट आफ पोटाश प्रति एकड़ का स्थानिक अनुप्रयोग करने का सुझाव दिया जाता है| अनुप्रयुक्त उर्वरकों के बेहतर उपयोग के लिए पौधों पर मिट्टी चढ़ाएँ|
तमिलनाडू														कपास की फसल का मौसम प्रारंभ होने में देर है| खेत की प्रारंभिक जुताई का कार्य चल रहा है|
पेरंबलुर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	3	3	20	
सलेम	0	0	2	1	0	0	0	0	0	2	4	8	32	
त्रिची	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	8	25	
विरुडुनगर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	15	

आदर्श वर्षा					
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	21-50	50-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

डा. के.आर. क्रांति, डा. ए. एच. प्रकाश, डा. संध्या क्रांति, डा. डी. मोंगा, डा. ब्लेज़ डी-सूजा, डा. एस. बी. सिंह, डा. सिंगनधूपे, डा.एम.वी. वेणुगोपालन, डा. इसाबेला अग्रवाल, डा. एम.सबेस, डा. विश्लेष नगरारे, डा. ऋषि कुमार, डा. एन अनुराधा नराला, डा. दीपक नगराले, श्रीमति संगीता औरंगाबादकर एवं कु. सचिता एलेकर

हिन्दी संसकरण: **डॉ. उल्हास नंदनकर,** मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं प्रभारी, हिन्दी अनुभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)